पाठ–तीन

क्या परमेश्वर बहुत अधिक अपेक्षा करता है?

...... उसकी योजना बहुत बड़ी है?

सत्रह वर्षीय सैम पहिली बार घर से बाहर गया था। उसने अपने छोटे से कस्बे में स्कूल की पढ़ाई पूरी की थी। अब वह अपने देश की राजधानी में विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने के लिए आया था। कक्षा में पहिला दिन तो उसके लिए डरावना सा था। जितने विद्यार्थी उसके कस्बे के स्कूल में थे उतने तो यहाँ केवल एक कक्षा में थे। इसके अतिरिक्त, टीचर ने साल भर में किए जाने वाले अध्ययन–पढ़ने के कार्य, लिखने के कार्य, परीक्षाएँ, जबानी रिपोर्ट एव अन्य कार्यों की लम्बी सूची विद्यार्थियों को बताई। यह तो असंभव जान पड़ा! सैम अत्यन्त हतोत्साहित हो गया।

सैम ने जिस बात पर ध्यान नहीं दिया था वह थी : सब कुछ उसी दिन में नहीं करना था; इसके अतिरिक्त टीचर भी सहायता करेगा। टीचर था ही वहाँ इसी कार्य के लिए.....सैम को उन सब लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता करना। सैम धीरे-धीरे उन्नति कर सकता था। प्रत्येक नया पाठ उसे पिछले पाठ में प्राप्त ज्ञान में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करता। अन्ततः वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो जाता।

जब भी हम परमेश्वर की विशाल योजना को देखना आरंभ करते हैं हम ठीक सैम के समान सोचना आरंभ कर देते हैं। यह हमें बहुत बड़ी दिखाई देती है; यह असंभव सी प्रतीत होती है। हाँ, हमारी प्रकृतिक या स्वाभाविक शक्ति से करने में तो यह असंभव ही है। परन्तु परमेश्वर के साथ सब कुछ संभव है। इस पाठ में हम उन बातों का अध्ययन करेंगे जो परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है; परन्तु हम उन बातों पर भी ध्यान देंगे जो वह हमारे लिए और हमारे द्वारा करता है कि जो लक्ष्य परमेश्वर ने हमारे जीवनों के लिए निर्धारित किए हैं उन्हें पूरा किया जाए।

इस पाठ में आप सीखेंगे...

- परमेश्वर महान बातों (कार्यों) की अपेक्षा करता है।
- परमेश्वर सामर्थपूर्ण सहायता देता है।
- जब हम असफल हो जाते हैं तब भी परमेश्वर अपना कार्य करने से रुकता नहीं है।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा...

- वर्णन करें कि परमेश्वर हमसे क्या अपेक्षा करता है।
- समझाना कि हम परमेश्वर की माँगों (अपेक्षाओं) को कैसे पूरा कर सकते हैं।
- समझाना कि हमारी असफलताएँ हमारे लिए परमेश्वर की योजना को नष्ट क्यों नहीं करतीं।

परमेश्वर महान बातों की अपेक्षा करता है

विषयवस्तु 1. परमेश्वर ने जो लक्ष्य हमारे लिए निर्धारित किए हैं उनको पूरा करने में हमें परमेश्वर की सहायता की क्यों आवश्यकता है....इन कारणों को पहिचानना।

जब आप परमेश्वर की योजना में उसके सहायक बनते हैं तब आपके पास उज्ज्वल भविष्य है। जो रूपरेखा वह आपके लिए अपनी योजना में बनाता है वह भली और अनन्त काल तक के लिए है। आइए, एक साथ मिलकर उन कुछ लक्ष्यों पर विचार करें जो उसने हमारे लिए निर्धारित किए हैं और जो उसकी रूपरेखा के भाग हैं। हम विशेषकर उन लक्ष्यों पर ध्यान देंगे जो परमेश्वर हम सबसे चाहता है कि उन्हें पूरा करें। जब इन लक्ष्यों तक सफलतापूर्वक पहुँचने में परमेश्वर हमारी सहायता करता है तो वह हमारे व्यक्तिगत जीवनों में भी अपनी योजना को पूरी करने में सक्षम है।

रूपान्तरण (कायापलट)

रोमियों 12:2 हमें बताता है कि हमारा पूरी तरह रूपान्तरण होना है। मैं सोचता हूँ कि अधिकांश लोगों की इच्छा है कि उनका रूपान्तरण या कायापलट हो। परन्तु उनके पूर्व परिवर्तन के स्थान पर वे बाहरी परिवर्तन ही चाहते हैं...ऐसा करने के लिए वे किसी

व्यक्ति या किसी आदर्श की नकल किया करते हैं। क्या यही हमारे लिए परमेश्वर की योजना है? क्या वह हमसे बस यही चाहता है कि जो कोई भला व्यक्ति हो हम उसके बाहरी गुणों को देखकर उसकी नकल करने लगें? ऐसा करना न केवल कठिन होग। पर संभवतः असंभव होगा। इसके अतिरिक्त, यदि ऐसा करने में हम सफल हो भी जाते हैं तो इससे क्या लाभ? आप ध्यान देते रहे हैं कि परमेश्वर की योजना वास्तव में कितनी व्यापक है; तो क्या हम मात्र नकल करने वाले बने रहें? यह विचार किसी भी रूप में उचित प्रतीत नहीं होता।

रूपान्तरण अथवा कायापलट नकल अथवा अनुकरण करने से कहीं बढ़कर है। रूपान्तरण अथवा परिवर्तित होना परमेश्वर की शेष योजना की कुंजी (मूल बात) है। इसके बिना, हमारे लिए जो परमेश्वर की योजना में निहित है उससे पूरी तरह वंचित होना है। दूसरे शब्दों में, परिवर्तित हुए बिना हम परमेश्वर की योजना के लाभों से वंचित रह जाते हैं।

फरीसियों ने धार्मिक व्यवहार की मात्र नकल की थी। उनका कभी रूपान्तरण अथवा परिवर्तन नहीं हुआ था। मत्ती 15:7-8 में ध्यान दें कि यीशु ने उनके विषय में क्या कहा था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने अपने शत्रुओं से प्रेम किया ही नहीं। स्वभावतः न तो हम अपने शत्रुओं से प्रेम करते हैं। और न ही अपने शाप देने वालों को आशीष ही देते हैं। यीशु के पर्वतीय उपदेश (मत्ती 5-7) पर ध्यान देते समय हम पाते हैं कि यीशु मसीह के बहुत सारे आदेशों का पालन करना बिल्कुल असंभव है...जब तक हमारा पूर्ण परिवर्तन न हो जाए।

हो सकता है कि आप ऐसी कई "असंभवनाओं" से मुकाबला कर चुके हैं जिनकी अपेक्षा परमेश्वर ने आप से की थी।

आपके लिए कार्य

1 नीचे दिये गये पवित्रशास्त्र के सन्दर्भों (पदों) में कुछ विशेष व्यवहार का वर्णन किया गया है। प्रत्येक पद को पढ़िए। तब व्यक्ति के गुण के अनुसार पद का मिलान कीजिए और रिक्त स्थान में अंक लिखें।

... (अ) मत्ती 5:40
... (ब) मत्ती 5:44
... (स) मत्ती 6:2
... (द) मत्ती 6:5
... (य) मत्ती 6:36

1) व्यक्ति जो नकल करने का प्रयत्न करता है।
2) व्यक्ति जिसका परिवर्तन हो गया।

आज्ञाकारिता

पिछले पाठ में हमने इस सच्चाई पर ध्यान दिया था कि परमेश्वर आज्ञाकारिता की माँग करता है। जब हम आज्ञाकारी होने की इच्छा रखते हैं और वह हमसे आज्ञाकारी होने की इच्छा रखता है, तो ऐसा करने से हमें कौन रोक सकता है? सच तो यह है कि कई बातें की जा सकती हैं।

पवित्रशास्त्र में कई आज्ञाएँ सक्रिय (क्रियाशील) हैं अर्थात् वे हमें आदेश देती हैं कि 'कुछ करना है'। अन्य आज्ञाएँ निष्क्रिय (कर्मप्रधान) हैं अर्थात् वे हमें आज्ञा देती हैं 'हमारे लिए कुछ किए जाने की स्वीकारोक्ति (अनुमति)' अथवा किसी बात का अनुभव करना। हम देख सकते हैं कि निष्क्रिय (कर्मप्रधान) आज्ञाओं का पालन करना हमारे लिए असंभव है, परन्तु सक्रिय (कर्तृवाचक)

आज्ञाओं का पालन करना भी असंभव है, क्योंकि ये हमारी स्वाभाविक इच्छाओं के विपरीत माँग करती हैं।

हमारे परिवर्तित हो जाने के बाद भी हम पाते हैं कि जो सत्य और ठीक है उसे कर पाना हमेशा सरल नहीं होता। फिर भी हम निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं कि सही और ठीक करें कि यीशु मसीह द्वारा स्थापित स्तर से मेल खा सकें। हम अन्य और भी ताकतों का अनुभव करते हैं। ये ताकतें (बल) लगता है कि हमें गलत काम या व्यवहार की ओर प्रेरित करती हैं।

आपके लिए कार्य

2 रोमियों 7:21-23 तक पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए।

(अ) पौलुस प्रेरित किस विरोध (संघर्ष) का सामना कर रहा था?

(ब) इस परिस्थिति के लिए वह क्या स्पष्टीकरण देता है?

पौलुस ने यह व्यवस्था (नियम) नहीं बनाई थी; उसने देखा कि यह तो उसमें आप से ही क्रियाशील है। उसका आज्ञाकारी होना इतना सहज और सरल था कि जो भी ठीक था और जिसे करने की इच्छा उसमें थी वह सब "व्यवस्था" ने त्रसित कर दिया था।

विकास

परिवर्तन (रूपान्तरण) तथा आज्ञाकारिता के अतिरिक्त यह स्पष्ट है कि परमेश्वर भी विकास की अपेक्षा (माँग) करता है। वह नहीं चाहता कि हम आत्मिक "शिशु" ही न बने रहें परन्तु

"बाल्यावस्था" में बढ़ें और अन्त में "वयस्क" बन जाएँ। जब हम बढ़ने (विकास करने) लगते हैं तो हम यह निर्णय करना आरंभ करते हैं कि सबसे महत्त्वपूर्ण क्या है जिससे कि हम सही चुनाव कर सकें। यह हमें स्थिरता प्रदान करता है। जब हम बढ़ते (विकास) करते हैं तो न केवल हम अधिक सीखते हैं परन्तु हम प्राप्त करने से देने की ओर बढ़ते जाते हैं। हममें हमेशा सीखने की प्रवृत्ति पनपती है और इस प्रकार हममें सिखाने का उत्तरदायित्व जागृत होता है। फिर भी, अभी हम परमेश्वर की योजना की खोज में पहिला क़दम उठाने की बात कर रहे हैं; दूसरों को सिखाना अप्राप्य लक्ष्यों तक पहुँचने के समान दिखाई दे सकता है।

आपके लिए कार्य

3 नीचे दिए गए सन्दर्भों को इफिसियों की पत्री में पढ़िये। प्रत्येक सन्दर्भ के आगे दिए गए अक्षर में से उस अक्षर पर गोला बनाएँ जिसमें आत्मिक विकास के तरीके को समझाया गया है।

(अ) 2:4-5
(ब) 4:13-15
(स) 5:1-2

4 नीचे दिए गए कथनों में एक कथन सबसे उत्तम है जिसमें यह समझाया गया है कि जो कुछ परमेश्वर हमसे अपेक्षा (माँग)

करता है उसको करने में उसकी सहायता की आवश्यकता होती है। सही उत्तर वाले अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) नये विश्वासी परमेश्वर से यह अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह उनको बताए कि क्या करना है।

(ब) हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जिसमें अधिकांश लोग परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का विरोध करते हैं।

(स) हमारी स्वाभाविक इच्छाएँ कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है कि ओर हमारी अगुवाई नहीं करतीं।

(द) हमारे लिए यह समझना वास्तव में कठिन है की परमेश्वर हमसे क्या चाहता है।

परमेश्वर सामर्थपूर्ण सहायता प्रदान करता है

विषयवस्तु 2. हमारे आत्मिक विकास में परमेश्वर के भाग (कार्य) और अपने भाग (कार्य) को पहिचानने का विवरण।

क्या परमेश्वर बहुत अधिक अपेक्षा करता है? क्या उसे सन्तुष्ट करना संभव है? क्या वह सहायता करेगा?

हमने कुछ लक्ष्यों के बारे में वर्णन किया था जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किए हैं। वे लक्ष्य जैसे भिन्न दिखाई देते हैं, वास्तविकता में हैं नहीं। ये लक्ष्य परमेश्वर के उन कार्यों को हमें दिखाते हैं जो वह विभिन्न दृष्टिकोणों से करना चाहता है।

हमने इस बात पर भी ज़ोर दिया था कि परमेश्वर की रूपरेखा और योजना में ये लक्ष्य मौलिक हैं और इनकी अपेक्षा प्रायः सब से की जाती है। इन्हें पूरा करने में परमेश्वर हमारी सहायता करता है। आइए, उन कुछ लक्ष्यों पर ध्यान दें जिनका अध्ययन हम कर चुके हैं और देखें कि उसकी योजना का अनुसरण (पालन) करने में परमेश्वर किस प्रकार सहायता करता है।

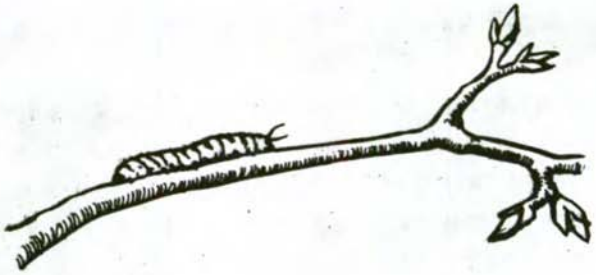

परमेश्वर हमें बदल देता है

प्रकृति के महान रहस्यों में एक रहस्य यह है कि एक इल्ली, तितली कैसे बन जाती है। एक इल्ली (केटरपिलर) अधिकतर कीड़े से सम्बन्धित है, किसी और से नहीं! वह रेंगती है और यदि उड़ना भी चाहे तो नहीं उड़ सकती। क्या उसके बारे में यह सोचा जा सकता था कि वह इतनी सुन्दर भी होगी? फिर भी उसके जीवन की बनावट में परमेश्वर ने बदलाहट का रूप रखा है। क्योंकि जब वह रेंगना ही आरंभ करती है, तो परमेश्वर का निश्चय यह है कि वह उड़े। यह परिवर्तन कैसे होता है?

इल्ली जब कोया (कोकून) में प्रवेश करती है तो इल्ली के रूप में "मरना" होता है जिससे कि वह एक उड़ने वाली तितली बनकर निकले। वह उड़ना सीखती नहीं। इल्ली प्रकृति के अनुरूप रेंगती है; तितली प्रकृति के अनुरूप उड़ती है। यह रूपान्तरण या बदलाव "रूपान्तरित होना" कहलाता है–यह इल्ली के प्रयास या कार्य का परिणाम नहीं है कि तितली की नकल करके सीख ले। यह तो अन्दरुनी (अन्दर के) बदलाव का परिणाम है।

आपके लिए कार्य

5 नीचे दिए गए सन्दर्भ अपनी बाइबल में से पढ़ें। इनमें से कौन सा सन्दर्भ रूपान्तरित होने का सबसे अच्छा विवरण प्रस्तुत करता है जो एक मसीही का सच्चा अनुभव है?

(अ) गलतियों 2:19-20
(ब) इफिसियों 1:9-10
(स) 2 पतरस 1:10

इल्ली का रूपान्तरित होना वास्तव में उस बात को हम पर प्रकट करता है जो परमेश्वर हममें कर रहा है। रूपान्तरित होने का विचार रोमियों 12:1-2 में दिया गया है जो उस बदलाव या परिवर्तन से सम्बन्धित है जिसकी अपेक्षा परमेश्वर करता है। ध्यान दीजिए—यह तभी हो सकता है जब नये जीवन का सिद्धान्त हममें हो। जैसा कि हमने कहा, इल्ली स्वयं को बदलने का प्रयास नहीं करती हैं। जो जीवन परमेश्वर ने उसमें रखा है वही उसे तितली में बदलता है। इसी प्रकार, जब हम पवित्र आत्मा के प्रति आज्ञाकारी होते हैं, जिसे परमेश्वर ने हमारे अन्दर रखा है, तो हम भी बदल जाते हैं अर्थात् हमारा जीवन-परिवर्तित हो जाता है।

आपके लिए कार्य

6 रोमियों 12:1-2 पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर अपनी नोटबुक में लिखिए।

(अ) हमसे कौन सी दो बातें करने को कही गई हैं?

(ब) हम परमेश्वर को क्या करने के लिए अपने हृदय में न्योता दें?

परमेश्वर की सामर्थ हम में कार्य करती है

"कर्मप्रधान" आज्ञाओं में परमेश्वर की भूमिका को देखना सरल है जब हमारा कार्य केवल सहयोग करना होता है। परन्तु वे कौन सी बातें हैं जो परमेश्वर हमसे करने के लिए कहता है? क्या हम इनको पूरा करने के लिए अपनी शक्ति पर निर्भर रहते हैं? उदाहरण के लिए, इफिसियों 4:17—6:20 में हमें अनेकों व्यवहारिक बातें बताई गई हैं जिनके द्वारा हम अपनी मसीहियत,

अपनी "मसीह की अनुरूपता" (मसीह के समान होने) को दर्शा सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अन्ततः हमारे करने के लिए छोड़ दी गई हैं। परन्तु फिर भी इनको करना हमारी अपनी सामर्थ के बाहर प्रतीत होता है—क्योंकि इनकी अपेक्षा अधिक है।

इफिसियों 2:10 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने हमें बनाया है और हम मसीह यीशु में भले कार्यों के लिए सृजे गए हैं। इन भले कार्यों का नाम इफिसियों 4:17—6:20 में दिया गया है। तब इफिसियों 3:20 में हमें बताया गया है कि परमेश्वर "जो ऐसा सामर्थी है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में क्रियाशील है, कि हमारी विनती और कल्पना से कहीं अधिक बढ़कर कार्य कर सकता है।"

इस पर विचार कीजिए। हमारी माँग अब यहाँ उसकी सामर्थ और योग्यता की सीमा के निकट है, और वह सामर्थ हमारे अन्दर कार्य करती है।

हमने "व्यवस्था" के विषय में बताया था जो पौलुस में कार्यकारी थी (और वह हममें से प्रत्येक में कार्यकारी रही थी)। इसने उसके सिद्ध आज्ञापालन का विरोध किया था। यदि वह "व्यवस्था" इतनी शक्तिशली है तो क्या यह परमेश्वर की योजना को हमारे लिए सीमित कर सकती थी? पौलुस ने भी अपने जीवन के एक चौराहे पर यह महसूस किया था कि यह "व्यवस्था" उसे बड़े प्रभावशाली रूप में वह करने से रोकती रही जिसे वह करना चाहता था। परन्तु इस द्विविधा का उत्तर रोमियों 8:1-4 में दिया गया है।

"व्यवस्था" (विधि, नियम, सिद्धांत) का प्रभाव जो अनाज्ञाकारिता का कारण बनता है उसे समाप्त (निलंबित) कर दिया गया; अब "दण्डाज्ञा नहीं" रही (रोमियों 8:1)। इसके विपरीत, परमेश्वर की सामर्थ हममें कार्य करती है।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजकर हमारी मदद की; वह पवित्र आत्मा के सामर्थ से हमारी सहायता करता है। आपके लिए परमेश्वर की योजना यह नहीं कि वह आपसे कुछ कराना चाहता है। वास्तव में, यही तो वह आपके लिए एवं आपके द्वारा कराना चाहता है।

बाइबल हमें यह समझने के लिए केन्द्रीय विचार देती है कि परमेश्वर की योजना को अपने प्रयत्न से करने तथा उसकी योजना को अपने जीवन में लागू होने देने के मध्य सन्तुलित बनाया रखा जाए तथा परमेश्वर को कार्य करने का अवसर देने के निमित्त हमारे जीवन उसी पर निर्भर हों। इस विचार का विवरण फिलिप्पियों 2:12-13 में दिया गया है।

अपने उद्धार के निमित्त डरते और काँपते हुए सक्रिय रहो, क्योंकि परमेश्वर सदैव कार्य करता है कि आपको अपने अभिप्राय: के प्रति आज्ञाकारी होने और स्वीकारने योग्य बनाए।

आपके लिए कार्य

7 नीचे तीन कथन दिए गए हैं कि हम कैसे उन लक्ष्यों तक पहुँच सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किए हैं जो विवरण सबसे उपयुक्त हो उसके अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) हम निर्णय करते हैं कि संसार का अनुसरण नहीं करेंगे। जब हम ऐसा करते हैं तो हम अपने मनों का रूपान्तरण करते हैं जिससे कि हम यहोवा की आज्ञा-पालन कर सकें। अधिकाधिक प्रयास करने के द्वारा हम लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते हैं।

(ब) हम अपने आपको परमेश्वर को दे देते हैं कि उसके आज्ञाकारी बनें। ठीक इसी समय परमेश्वर की सामर्थ हमें रूपान्तरित (बदलने) करने के लिए हममें कार्य करती है। एक साथ मिलकर हम उन लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होते हैं जो उसने निर्धारित किए हैं।

(स) परमेश्वर हमारे मनों पर नियंत्रण कर लेता है और हमें तैयार करता है कि जो ठीक है वही करें। क्योंकि जो लक्ष्य उसने निर्धारित किए हैं वे कठिन हैं, इन लक्ष्यों तक पहुँचने में वही सब कार्य स्वयं करता है।

जब हम असफल होते हैं, परमेश्वर रुकता नहीं है

विषयवस्तु 3. ऐसे कारणों को चुनना कि हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि हमारी असफलताएँ हमारे लिए परमेश्वर की योजना को नष्ट नहीं करतीं।

परमेश्वर की योजना को समझने और उसके निर्देशन का पालन करने में एक पहलू है जिसका हम सामना नहीं करना चाहते हैं : कहीं न कहीं हम असफल होते हैं। शायद यह अज्ञानता अथवा निर्बलता की दशा में होता है। कभी-कभी तो हमारे उद्देश्य ही सही नहीं होते। "सामर्थ जो हममें कार्यकारी है" (इफिसियों 3:20) इसके होने के उपरान्त, तथा उस सत्य के होने के बावजूद कि "परमेश्वर निरन्तर हममें कार्य करता है" (फिलिप्पियों 2:13), हम असफल हो जाते हैं।

असफल होना

पाप के लिए परमेश्वर के पास उत्तर है--क्षमा, नया जन्म। परन्तु यदि हम नया जन्म पाने के बाद भी असफल होते हैं तब क्या होगा? क्या हमारा असफल होना परमेश्वर की योजना को बदल देता है? तब क्या हम "दूसरी उत्तम बात" के लिए प्रयास

करें? यदि हम एक योजना में असफल होते हैं तो क्या परमेश्वर के पास हमारे जीवन के लिए और भी अनेक रूपरेखाएँ हैं? क्या हमारे असफल होने को परमेश्वर आश्चर्य के रूप में लेता है? तब क्या वह हमें यूँ ही छोड़ देता है कि हम अपनी समस्याओं से आप ही निपटें?

आइए, कुछ ऐसी सच्चाइयों पर मनन करें जो हमारे असफल होने की दशा को समझने में कारगर सिद्ध होंगी—हम क्यों असफल होते हैं और इसके प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या होती है। यह मनन ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर देने में हमारी सहायता करेगा।

हमारा भूतकाल में असफल होना—हम पर प्रभाव डालता है

हमारी अधिकतर संवेदनाएँ और मनोभाव हमारी अपनी बातों (इतिहास) से एक विशेष रूप धारण करती हैं। उदाहरण के लिए यदि एक विशेष अवकाश का दिन साल-दर-साल आनन्द व खुशी के रूप में मनाया जाता है, तो इस दिन के निकट आने पर हमारे अन्दर विशेष प्रकार की संवेदना जागृत होने लगती है। कुछ छुट्टी के दिन तो उत्सव मनाने के होते हैं। परिवार में लोग और मित्र आपस में इनाम दिया करते हैं। घर सजाए जाते हैं। आनन्द और गीतों का समा बँध जाता है। जब ये छुट्टी के दिन निकट आने लगते हैं तो बीते उत्सव की बातें याद आने लगती हैं। लोग एक विशेष प्रकार के मनोभाव से भर उठते हैं। और ये संवेदनाएँ तथा मनोभाव उस बात से प्रभावित होते हैं कि व्यक्ति के सोचने का ढंग क्या है।

इसी प्रकार से कभी-कभी असफलताएँ हमारे मनोभावों पर प्रभाव डालती हैं। मसीह का हमारे जीवनों में आने से पूर्व हमारे पास अपने पापों का इतिहास होता है। जब ऐसी परिस्थितियाँ

हमारे समक्ष आती हैं जिनमें पहिले हम असफल हुए थे तो उन असफलताओं की स्मृति भी हमारे मानस-पटल पर अंकित हो जाती हैं। तब हमारे मनोभाव हमें एक विशेष बात को सोचने के लिए बाध्य करते हैं। शैतान हमारी इन स्मृतियों और मनोभावों को परीक्षा में डालने हेतु प्रयोग करता है, और हम ठीक वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं जैसा कि हम पूर्व में किया करते थे।

आपके लिए कार्य

8 निम्नलिखित में से कौन-सी घटना एक ऐसा उदाहरण है जिसमें बताया गया है कि व्यक्ति विशेष ढंग का इतिहास उसके मनोभाव (सोचने के ढंग) पर प्रभाव डाल सकता है?

(अ) टेरेसा के विश्वासी होने से पूर्व उसके कुछ ऐसे मित्र थे जो सही जीवन नहीं जी रहे थे। अपनी मित्रता बनाए रखने के लिए टेरेसा ने भी उनके जैसे ग़लत काम किए। अब वह एक विश्वासी है और अब वह उन ग़लत कामों— को नहीं करती है। उसके नये मित्र उसको सही जीवन जीने के लिये उत्साहित करते हैं।

(ब) जैस्सी के विश्वासी बनने के पूर्व वह अक्सर उन लोगों पर क्रोधित हो जाया करता था जिनके विचार उससे मेल नहीं खाते थे। हाल ही में उसकी मुलाकात एक ऐसे मसीही भाई से हुई जो उससे सहमत नहीं था। जैस्सी को यह महसूस होने लगा कि उसके अन्दर उस मसीही भाई के प्रति क्रोध उत्पन्न होने लगा है।

अतः वास्तविकता में, उद्धार पाने के बाद हमें पाप नहीं करना चाहिए, पर अक्सर हम कर बैठते हैं। हमारी आदतें हमेशा सही

नहीं रहतीं—क्योंकि हमारे चारों ओर का वातावरण शाप के अधीन है। हम असफल होते हैं क्योंकि अभी भी हम मनुष्य प्राणी हैं, अभी भी परीक्षा में पढ़ते हैं, अभी भी हम पतित संसार में रहते हैं, अभी भी बढ़ रहे हैं और अभी भी हमें बदलने की आवश्यकता है।

परमेश्वर हमारी असफलताओं को जानता है

हमारी सब असफलताओं को परमेश्वर जानता है। यह महसूस करना अति आवश्यक है कि हम परमेश्वर को महज आश्चर्य के रूप में ग्रहण नहीं करते हैं। हमारे जीवन की किसी परिस्थिति में ऐसा नहीं होता; न ही कोई छू लेने वाली बात से ऐसा होता है। यदि हमारा पाप परमेश्वर को आश्चर्य में नहीं डालता, यदि हमारे अनुभव करने से पूर्व ही वह हमारी असफलताओं को जानता है, तब हमें निश्चय हो सकता है कि उसने हमारी असफलताओं को अपने लेखे में ले लिया है।

आपके लिए कार्य

9 पहले पाठ के अन्त में आपसे भजन संहिता 139 पर मनन करने के लिए कहा गया था। यह भजन हमें पुनः निश्चय दिलाता है कि परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है। पद 2-4 तथा 11-16 को दुबारा पढ़ें। प्रत्येक सही कथन के अक्षर पर गोला बनाएँ।

(अ) हमारे लिए परमेश्वर का ज्ञान हमारे जन्म से ही आरंभ होता है।

(ब) हमारे कुछ सोच-विचारों को परमेश्वर नहीं जानता है।
(स) हमारे प्रत्येक कार्यों (बातों) को परमेश्वर जानता है।

परमेश्वर का अनुग्रह हमारी असफलताओं पर विजयी होता है

हमने बताया कि परमेश्वर हमारी असफलताओं के बारे में जानता है। जब हम असफलता की सच्चाई पर विचार करते हैं तो हमारे पास ऐसे कौन से प्रावधान हैं जो यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह निरन्तर हमारे जीवनों में कार्य करता है?

पहिला, क्षमा उपलब्ध है; यह हमारे पाप से अलग करने के लिए परमेश्वर का तरीका है। 1 यूहन्ना 1:9 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर हमारे पाप क्षमा करने की प्रतिज्ञा करता है, जब हम उसके सामने अपने पापों को मान लेते हैं। हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना कभी भी हमारे स्वयं के प्रयत्न से सिद्ध बनने पर आधारित नहीं है परन्तु यह तो परमेश्वर के ज्ञान और उसकी योग्यता पर आधारित है।

दूसरा, परमेश्वर की सामर्थ उपलब्ध है। परमेश्वर जो भी सामर्थ आपको उद्धार पाने में इस्तेमाल करता है वह हमारे उद्धार प्राप्त कर लेने के बाद भी बनी रहती है। परमेश्वर ने आपके जीवन में अपनी योजना को लागू करने में आपके उद्धार पाने के बाद तक प्रतीक्षा नहीं की। आपके उद्धार का अनुभव उस दिन को दर्शाता है जब आपने परमेश्वर की योजना में सम्मिलित होने का चुनाव किया। यह परमेश्वर का नहीं आपका चुनाव था। उसके सन्तान होने के नाते आपको यह निश्चय हो सकता है कि अभी ही उसकी सामर्थ आपके लिए उपलब्ध है।

परमेश्वर की यह सामर्थ प्रभावकारी है। 2 कुरीन्थियों 12:7-10 में पौलुस प्रेरित अपने अनुभव का वर्णन करता है। उसने जिस

छुटकारे के लिए प्रार्थना की थी उसको पाने में वह "असफल" रहा था। परन्तु अपने अनुभव के द्वारा पौलुस ने एक सबक सीखा जो हमें यह दर्शाता है कि परमेश्वर की सामर्थ किस तरह प्रभावकारी है।

आपके लिए कार्य

10 2 कुरिन्थियों 12:7-10 पढ़िए और अपनी नोटबुक में नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखिए।

(अ) जिस अनुभव का पौलुस ने वर्णन किया उससे उसने परमेश्वर की सामर्थ के विषय में क्या सीखा?

(ब) जो कुछ उसने सीखा था उसके परिणामस्वरूप पौलुस क्या करने योग्य बन गया?

इसके अतिरिक्त, हमारे असफल होने के बावजूद परमेश्वर की सामर्थ कार्य करती है। जब हम असफलता का सामना करते हैं तो अक्सर हम इस बात का सामना करते हैं: क्या असफलता का अर्थ है मेरे पास "परमेश्वर की उत्तमताओं का दूसरा भाग"? अर्थात् जो परमेश्वर की दृष्टि में सबसे उत्तम है उससे "निचले स्तर" की आशीषें? क्या मैंने अपने लिए उसकी सिद्ध योजना को नष्ट कर दिया है?

परमेश्वर ने यिर्मयाह नबी को एक सबक सिखाया जो कि उपरोक्त बातों को समझने में हमारी सहायता करेगा। इस्राएल जाति की असफलता को देखने के उपरान्त यिर्मयाह को एक कुम्हार के घर भेजा गया (यिर्मयाह 18:1-10)। उसने कुम्हार को ध्यान से देखा कि वह मिट्टी लेकर उसे विभिन्न आकार का पात्र बना देता है। पर जब वह मिट्टी को आकार दे रहा होता तो ठीक

उसके बनने के बीच में ही वह "असफल" हो जाता। पात्र का रूप बिगड़ जाता। वह उस मिट्टी को फेंकने या बिगड़े रूप का पात्र बनाने के बजाए वह उसे फिर से नया आकार देता और इस प्रकार एक सुन्दर पात्र बन जाता।

यिर्मयाह ने यह समझना आरंभ किया कि परमेश्वर ने इस्राएल के असफल होने को किस रूप में लिया। परमेश्वर यह नहीं चाहता था कि उनको निकाल फेंके परन्तु उनको नया रूप देना चाहता था।

परमेश्वर के ज्ञान में न केवल आपकी अपूर्णताएँ पर पूर्णताएँ भी जानी गई हैं। परमेश्वर अभी भी आपको ऐसे पात्र में परिवर्तित कर देना चाहता है जो उसे प्रसन्न करने योग्य ठहरे। वह मिट्टी के पात्र रूपी आपके जीवन में जिन अवयवों (उपादानों) को देखता है वह है "आपके जीवन में मसीह" (कुलुस्सियों 1:27)। असफलता, चाहे वह पाप क्यों न हो इस सत्य को नहीं बदल सकती कि मसीह आपके जीवन में निवास करता है।

इब्रानियों का 11वाँ अध्याय उन तमाम व्यक्तियों के नामों की सूची बताता है, जिन्हें विश्वास के वीरों की पदवी मिली और आदर-योग्य महिमा। उनके जीवनों का कभी भी परमेश्वर की "निचले स्तर" की योजना के रूप में वर्णन नहीं किया जाएगा। परन्तु, इनके नामों की सूची पर ध्यान दीजिए। यदि आपको इन लोगों के जीवन वृतान्त पढ़ने का अवसर मिला हो, तो आप यह महसूस करेंगे: ये लोग जानते थे कि असफलता क्या थी। उनकी "असफलताएँ" थीं—पर वे इतिहास के वीर-नायक हुए।

आपके लिए कार्य

11 हमने बताया है कि हमें यह निश्चय हो सकता है कि हमारी असफलताएँ और निर्बलताएँ हमारे निमित्त परमेश्वर की योजना को नष्ट नहीं करतीं। नीचे दिए गए कथनों में से उन कथनों के अक्षरों पर गोला बनाएँ जो ऊपर बताई गई बात का सटीक कारण बताते हैं।

(अ) प्रत्येक के जीवन में असफलताएँ आती हैं।

(ब) परमेश्वर की योजना हमारी योग्यता पर आधारित है कि यीशु मसीह को ग्रहण करने के उपरान्त ही इस पर पूरी तरह से अमल होता है।

(स) हमारी असफलताओं को बहुत पहले से जानते हुए भी परमेश्वर ने हमारे लिए अपनी योजना बनाई है।

(द) हमारी असफलताएँ और पाप, परमेश्वर की सामर्थ को हमारे अन्दर कार्य करने से नहीं रोक सकते।

(य) लोग अक्सर असफल होते हैं क्योंकि उनका इतिहास ही असफलताओं से भरा है।

(र) जो असफल होते हैं परमेश्वर के पास उनके लिए "निचले स्तर" की योजना है।

इब्रानियों ।। अध्याय में दी गई व्यक्तियों की सूची के समान, आप भी परमेश्वर की सिद्ध इच्छा अनुभव कर सकते हैं, हालाँकि आपके जीवन में भी असफलताओं के अवसर आए हैं। यीशु आपसे भी वही कहता है जो उसने पौलुस प्रेरित से कहा, "मेरा सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होता है" (2 कुरिन्थियों 12:9)। उसका सामर्थ्य आपको असफलताओं पर जयवन्त करना है और उसकी योजना को पूरी करने योग्य बनाता है।

अपने उत्तरों को जांच लें

6 (अ) हमें–(1) जीवित बलिदान के रूप में स्वयं को समर्पित करना है तथा (2) इस संसार के सदृश नहीं बनना है।

(ब) हमें परमेश्वर को अवसर देना है कि वह हमारे मन परिवर्तन करने के द्वारा हमारा भीतरी रूपान्तरण करे।

(आपका उत्तर इसी तरह का होना चाहिए।)

1 (अ) एक व्यक्ति जिसका रूपान्तरण हो चुका है–2)

(ब) एक व्यक्ति जिसका रूपान्तरण हो चुका है–2)

(स) एक व्यक्ति जो नक़ल करने का प्रयत्न करता है–1)

(द) एक व्यक्ति जो नक़ल करने का प्रयत्न करता है–1)

(य) एक व्यक्ति जिसका रूपान्तरण हो चुका है–2)

7 (ब) हम अपने आपको परमेश्वर को सौंपते हैं–

2 (अ) वह भला करना चाहता था परन्तु उसने वह किया जो ग़लत था।

(ब) उसने कहा कि व्यवस्था उसके शरीर में कार्यकारी थी। इसने उसे पाप का दास बना दिया।

8 (ब) जैस्सी से पहले...

3 (ब) 4:13-15

9 (अ) ग़लत

(ब) ग़लत

(स) सही

4 (स) हमारी स्वाभाविक इच्छाएँ वह करने में हमारी अगुवाई नहीं करतीं जो परमेश्वर हमसे चाहता है कि करें।

10 (अ) पौलुस ने सीखा कि जब वह निर्बल था तब परमेश्वर की सामर्थ उस पर अत्यधिक थी।

(ब) पौलुस अपनी निर्बलताओं में आनन्द करने योग्य था क्योंकि ऐसी दशा में ही उसने परमेश्वर की सामर्थ का सबसे अधिक अनुभव किया।

(आपका उत्तर भी इसी तरह का होना चाहिए।)

5 (अ) गलतियों 2:19-20

11 (स) परमेश्वर ने हमारे लिए अपनी योजना बनाई...

(द) हमारी असफलताएँ और पाप ऐसा नहीं...